ISSN : 2395-4132

THE EXPRESSION

An International Multidisciplinary e-Journal

Bimonthly Refereed & Indexed Open Access e-Journal

Impact Factor 3.9

Vol. 7 Issue 4 August 2021

Editor-in-Chief : Dr. Bijender Singh

Email : editor@expressionjournal.com

www.expressionjournal.com

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal
(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)
www.expressionjournal.com ISSN: 2395-4132

डॉ. लोहिया की बदौलत आया गैर–कांग्रेसवाद

डॉ. श्रवण कुमार यादव
प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान
धर्मादेवी बद्री प्रसाद स्मारक महाविद्यालय, कुड़वार सुल्तानपुर
(संबद्ध डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या)

डॉ. राममनोहर लोहिया का जन्म 23 मार्च, 1910 को उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जनपद में (वर्तमान अम्बेडकर नगर जनपद) अकबर पुर नामक स्थान में हुआ था। उनके पिताजी श्री हीरालाल पेशे से अध्यापक व हृदय से सच्चे राष्ट्रभक्त थे। ढाई वर्ष की आयु में ही उनकी माताजी चन्दा देवी का देहान्त हो गया। उन्हे दादी के अलावा सरयूदेई (परिवार की नाईन) ने पाला। टंडन पाठशाला में चौथी तक पढ़ाई करने के बाद विश्वेश्वरनाथ हाईस्कूल में दाखिला हुआ। उनके पिताजी गांधी जी के अनुयायी थे। जब वे गांधीजी से मिलने जाते तो राम मनोहर को भी अपने साथ ले जाया करते थे। इसके कारण गांधीजी के विराट व्यक्तित्व का उन पर गहरा असर हुआ। पिताजी के साथ 1918 में अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन में पहली बार शामिल हुए। बंबई के मारवाड़ी स्कूल में पढ़ाई की।

लोकमान्य गंगाधर तिलक की मृत्यु के दिन विद्यालय के लड़कों के साथ 1920 में पहल अगस्त को हड़ताल की। गांधीजी की पुकार पर 10 वर्ष की आयु में स्कूल त्याग दिया। पिताजी को विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के आन्दोलन के चलते सजा हुई। 1921 में फैजाबाद किसान आन्दोलन के दौरान जवाहरलाल नेहरू से मुलाकात हुई। 1924 में प्रतिनिधि के रूप में कांग्रेस के गया अधिवेशन में शामिल हुए। 1925 में मैट्रिक की परीक्षा दी। कक्षा में 61 प्रतिशत नंबर लाकर प्रथम आए। इंटर की दो वर्ष की पढ़ाई बनारस के काशी विश्वविद्यालय में हुई। कालेज के दिनों से ही खद्दर पहनना शुरू कर दिया। 1926 में पिताजी के साथ गौहाटी कांग्रेस अधिवेशन में गए। 1927 में इंटर पास किया तथा आगे की पढ़ाई के लिए कलकत्ता जाकर ताराचंद दत्त स्ट्रीट पर स्थित पोद्दार छात्र होस्टल में रहने लगे। विद्यासागर कालेज में दाखिला लिया। अखिल बंग विद्यार्थी परिषद के सम्मेलन में सुभाषचंद्र बोस के न पहुंचने पर उन्होंने सम्मेलन की अध्यक्षता की। 1928 से अखिल भारतीय विद्यार्थी संगठन में सक्रिय हुए। साइमन कमीशन के बहिष्कार के लिए छात्रों के साथ आंदोलन किया।

लोहिया ने हमेशा नेहरू को यथास्थितिवाद का चट्टानी चेहरा बताया। लोहिया ने सबसे पहले देश में जड़ जमा चुकी उस यथास्थितिवादी चट्टाने संस्कृति को तोड़ने का कार्यक्रम और दर्शन प्रस्तुत किया। उसके पीछे केवल इतनी मंशा थी कि आजादी के बाद नेहरू के नेतृत्व में जिस सत्ता संस्कृति का जन्म हुआ और वह पल्लवति पुष्पित होता रहा उसकी जड़ पर प्रहार किया जाय। यह काम लोहिया ने अपने हाथों में लिया और बहुत हद तक पूरा किया।

डॉ राममनोहर लोहिया भारतीय राजनीति और समाजवाद को देशज रंग में रंगने वाले महानायक थे। वे पिताजी के साथ 1918 में अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन में गए और वहीं से उनका राजनैतिक सफर शुरू हुआ। सन 1962 में डॉ लोहिया जब प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के खिलाफ इलाहाबाद के फूलपुर से चुनाव लड़ रहे थे तब उन्होंने एक चुनावी सभा में कहा था–मैं एक चट्टान सा हूं। मेरा विश्वास है यह चट्टान टूटेगी नहीं, लेकिन हां, कुछ चटक जरूर सकती है। उनकी इस साफगोई में कितना आत्मबल वैचारिक सफाई और समय की समझ थी। इसे बखूबी समझा जा सकता है। उनके इसी तेवर ने उन्हें भारत की राजनीति में उस वक्त गैर–कांग्रेसवाद का जन्मदाता बना दिया। यह वह दौर था जब यह माना जाता था कि कांग्रेस उस बरगद की तरह है जिसके नीचे कुछ भी पनप नहीं सकता।

लेहिया ने हमेंशा नेहरू को यथास्थितिवाद का चट्टानी चेहरा बताया। लोहिया ने सबसे पहले देश में जड़ जमा चुकी उस यथास्थितिवादी चट्टाने संस्कृति को तोड़ने का कार्यक्रम और दर्शन प्रस्तुत किया। इसके पीछे केवल इतनी मंशा थी कि आजादी के बाद नेहरू के नेतृत्व में जिस सत्ता संस्कृति का जन्म हुआ और वह पल्लवित पुष्पित होता रहा उसकी जड़ पर प्रहार किया जाय। यह काम लोहिया ने अपने हाथों में लिया और बहुत हद तक पूरा किया।

नौकरशाही, भ्रष्टाचार, औद्योगिकनीति, विदेशीनीति, श्रमनीति आदि कई मुद्दों पर भारत लगातार कमजोर हो रहा था। जिसका जवाब किसी के पास नहीं था। आम आदमी और सरकार के बीच फासला बढ़ता जा रहा था। इस कमजोरी के खिलाफ छेड़े गए अभियान में कई राजनीतिक ध्रुवीकरण हुए और टूटे, इस जोड़–तोड़ के बीच में एक बार केंद्र की सत्ता कांग्रेसियों के हाथों से खिसकी भी। इस सत्ता के खेल में अगर एक बार चार–छह माह के लिए गैरकांग्रेसी सरकार आई भी तो वह असरदार नहीं रही। इस सरकार का असर इतना भी नहीं रहा कि हम संतुष्ट होने के लिए भी यह कह सकें कि केंद्र में कांग्रेस से अलग कोई सरकार थी। जनता के बीच केंद्र में सरकार के प्रति विश्वसनीयता कहीं देखने को नहीं मिली। लोहिया ने बार–बार सत्ता की चमक–दमक में समाजवादियों को सचेत किया। लोहिया ने साफ कहा था कि परिवर्तन, कुर्सी, साधन, पद और गरिमा के लिए नहीं बल्कि परिवर्तन तो सबसे गरीब आदमी की मानसिकता में दिखना चाहिए और जब तक यह दिखाई नहीं देता है तब तक गैरकांग्रेसवाद को पूर्णता नहीं मिल सकती है।

ऐसे में आज यह सोच की गैर कांग्रेसवाद अब अप्रसांगिक हो गया है सर्वथा गलत है। इसकी प्रसांगिकता पहले से कहीं अधिक हो गई है और समाजवादी आन्दोलन में यह एक महत्वपूर्ण पणाव डाल सकता है।

लेहिया ने दुनिया से अन्याय व असमानता दूर करने के लिए सप्तक्रांति के दर्शन दिए। उन्होंने लिंग भेद, जातिप्रथा को समाप्त करने की आर्थिक विषमता, भाषा की दास्तां, अस्त्र–शस्त्र के मुकाबले सभी अहिंसा के हथियार का प्रयोग करने की बात कही भारत विभाजन से लोहिया अत्यंत क्षुब्ध थे। उन्हें इस बात का मलाल था कि वे इस समय इस तरह बंटवारे के खिलाफ जूझ नहीं सकते।

यह वो दौर था जब देश संप्रादायिकता की आग में जल रहा था। बंगाल व सीमांत प्रांतो में खून की होली खेली जा रही थी। महात्मा गांधी अनशन पर बैठे थे। गांधी जीवन संकट में था। ऐसे में हिन्दू–मुश्लिम एकता स्थापित करने के लिए लोहिया ने जो पहल की, उसे भुलाया नहीं जा सकता। लोहिया भारत और पाकिस्तान को एक करने के लिए तत्पर थे। उन्होंने दोंनो देशों को महासंघ बनाने का प्रस्ताव भी रखा था। उन्होंने कहा था कि बंटवारे से दोंनो देशों की जनता को तब तक दुख उठानी पड़ेगी जब तक दोंनो देश एक नहीं हो जाते।

लोहिया का दर्शन मार्क्स और गांधी के विचारों से प्रभावित रहा है। इन दोनों चिंतकों के कुछ विचारों को लेकर ही लोहिया ने चौखम्भाराज्य की परिकल्पना की। लोहिया ने एक ओर जहां मार्क्स के मूल समाज को स्वीकार किया, वहीं गांधी के मानवतावादी दरिद्र नारायण और भारतीय संस्कृति के प्राचीन मूल्यों को आधुनिकता का स्वरूप देकर सत्याग्रह के धारदार हथियार से अपने विचारों को तेजमय बनाने की पुरजोर कोशिश की।

उनके सभी प्रयोग जमीनी थे। सामाजिक समानता, आर्थिक समानता, राष्ट्रीयता एवं लोकतंत्रा के विचारों के साथ सत्याग्रह का शास्वत और चौखम्भा तंत्रा उनके विचारों की धुरी ने। पिछड़ों, दलितों, महिलाओं तथा

अल्पसंख्यकों को आरक्षण देने का सबसे पहला आंदोलन डॉ. राममनोहर लोहिया ने शुरू किया था, जो आज देष में अपनी जड़े जमा चुका है।

डॉ. लोहिया अपने आप को कुजात गांधीवादी कहते थे, जकि उनका मानना था कि कांग्रेस की सारी राजनीति सरकार पाने के लिए होती है। ऐसा एक लोकमान्य मिथक है कि कांग्रेसी सरकार गांधीवादी परिभाषा में आती है। उनका मानना था कि समाजवादी परिदृश्य में सरकारें जनता के लिए होती हैं और जनता की होती है। इस प्रकार की सरकार जनता के लिए काम करती है और उनके हिसाब से नीतियां बनाती है। उनका सापफ मानना था कि ज कार्य जनता के लिए होगा, तो कार्य का नतीजा भी ड़ा होगा। नीतियों के क्रियान्वयन के लिए सरकार की बलि भी देनी पड़ सकती है। लोहिया मानते थे कि सरकारों को तावे की रोटी की तरह उलटते पुलटते रहना चाहिए, ताकि वह निरंकुष न हो जाए।

लेहिया का कहना था कि जहां पर सत्ता के प्रति मोह होगा वहीं यथास्थितिवाद का जन्म होगा और यथास्थितिवाद का समूल नाश ही गैर कांग्रेसवाद दरअसल यथास्थितिवादी सरकार को खत्म करने का दर्शन है। सरकार की मानसिकता कभी भी परिवर्तन नहीं हुआ करती और परिवर्तनवादी कभी यथास्थितिवादी नहीं होता। इसलिए जिन संस्कारों को तोड़ने के लिए गैर कांग्रेसवादी का दर्शन सामने आया था वह आज भी भारतीय राजनीति में प्रासांगिक बना हुआ है।

लोहिया को परिवर्तन की उम्मीद युवाओं में दिखती थी। वे बार–बार कहा करते थे कि जिन्दा कौमे पांच वर्ष तक इन्तजार नहीं करती। उनकी इस टिप्पणी में परिवर्तन के लिए उनकी पीड़ा और उनका दर्शन समझा जा सकता है। आज की परिस्थित में जिस हालात में देश का युवा खड़ा है उसे देखकर लोहिया की आत्मा सबसे अधिक दुखी होगी। वह परिवर्तन का आधार ही युवा को मानते थे। वह कहा करते थे कि साम्राज्यवाद व्यवस्था रूपी घोड़े की लगाम युवा के हाथों में होनी चाहिए, क्योंकि युवा परिवर्तन का भूखा है, सत्ता और सुविधा का नहीं और इसलिए जब हम मानते हैं कि गैर कांग्रेस परिवर्तन का एक साधन है तो हमें उस साधन को निरंतर नियमन करने वाली शक्ति युवा के प्रति भी सजग और सचेत रहना चाहिए।

यह समाजवादी आन्दोलन का दुर्भाग्य रहा है कि 60 के बाद देश में युवा आन्दोलन के लिए कोई सशक्त समाजवादी नेता और चिंतक पैदा नहीं हो पाया। 1992 को भारतीय राजनीतिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जाता है। लोहिया के शिष्य मुलायाम सिंह यादव ने लखनऊ में समाजवादी पार्टी की फिर से स्थापना करके समाजवादी आन्दोलन को जीवंत और गतिशील बनाने का काम किया। उन्होंने समाजवादी आन्दोलन को जो व्यापकता, शक्ति और दृढ़ता प्रदान करने की पहल कि वो लोहिया की याद को जिन्दा रखने में सहायक बन सके।

किसी लेखक ने ठीक लिखा है कि डॉ. राम मनोहर लोहिया गंगा की वो पावन धारा थे जहां कोई बेहिचक डुबकी लगाकर मन और प्राण को ताजा कर सकता है। गांधी के शब्दों में लोहिया तुम बहादुर हो, वह तो शेर भी होता है, विद्वान हो, विद्वान तो वकील भी होता है, इनसे परे तुममें एक विशिष्ट गुण है।

देश में गैर–कांग्रेसवाद की अलख जगाने वाले महान स्वतंत्रता सेनानी और समाजवादी नेता राम मनोहर लोहिया चाहते थे कि दुनियाभर के सोशलिस्ट एकजुट होकर मजबूत मंच बनाए। लोहिया भारतीय राजनीति में गैर कांग्रेसवाद के शिल्पी थे और उनके अथक प्रयासों का फल था कि 1967 में कई राज्यों में कांग्रेस की पराजय हुई, हालांकि केंद्र में कांग्रेस जैसे–तैसे सत्ता पर काबिज हो पाई। हालांकि लोहिया 1967 में ही चल बसे लेकिन उनके गैर कांग्रेसवाद की जो विचारधारा चलायी उसी की वजह से आगे चलकर 1977 में पहली बार केंद्र में गैर सरकार बनी। लोहिया मानते थे कि अधिक समय तक सत्ता में रहकर कांग्रेस अधिनायकवादी हो गई थी और वह उसके खिलाफ संघर्ष करते रहे।

उस समय की तमाम ऐसी घटनाओं और स्थितियों का जिनके प्रति एक आम भारतीय नागरिक के मन में बहुत स्पष्ट और तार्किक व्याख्या नहीं है, लोहिया ने अपनी पुस्तक 'गिल्टी मैन एंड इंडियाज पार्टीशन' (भारत विभाजन के गुनहगार) में परद दर परत रहस्यों को खोला है। लेकिन हमारा दुर्भाग्य है कि उस समय के पूरे आंखों देखे इतिहास को ही नहीं, बल्कि उसके एक सक्रिय, जीवंत पात्र रहे लोहिया की बातों को आजाद भारत में सत्तारूढ़ दल द्वारा एक विपक्षी नेता की (खीझ) से ज्यादा नहीं समझने दिया गया, जबकि सच्चाई यह है कि

सत्ता हस्तातरण के खेल की असलियत संग्रहालयों में दफन दस्तावेजों से ज्यादा लोहिया जैसे नेताओं को भी मालूम थी जिसे होते हुए उन्होंने अपनी आंखों से देखा था।

सन्दर्भ सूची

1. Indian Review
2. Asian Recorder
3. Indian Journal of Political Science
4. The Hindustan Times, New Delhi
5. The Times of India. New Delhi
6. जनमोर्चा, फैजाबाद
7. आज, गोरखपुर, लखनऊ
8. दैनिक जागरण, लखनऊ
9. सहारा समय, लखनऊ
10. राष्ट्रीय सहारा, लखनऊ
11. हिन्दुस्तान, लखनऊ
12. समाजवादी बुलेटिन,
13. कांग्रेस सोशलिस्ट पत्र, 1936,
14. ढाका युनिवर्सिटी में डॉ० लोहिया का व्याख्यान, विश्व राजनीति में आगामी साल)